ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-2* Issue-9* December- 2017
Anthology : The Research

प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री–विमर्श

अर्चना शर्मा
प्राचार्या,
हिन्दी विभाग,
के0 एस0 महाविद्यालय,
मोरैना, म.प्र.

सारांश

हिन्दी साहित्य की कुछ प्रगतीषील लेखिकाओं ने स्त्री–विमर्ष के नाम पर स्त्री के अधिकारों की इस हद तक वकालत की है मानो समाज के प्रत्येक वर्ग की महिला पुरूषों द्वारा शोषित की जा रही है, उसकी वैयक्तिक चैतना पर दमन किया जा रहा है और वह मुक्ति के लिये झटपटा रही है। पाश्चात्य देशों से स्त्री–विमर्ष आन्दोलन का समर्थन करते हुये प्रत्येक स्त्री पुरूष लेखकों ने नारी अत्याचार के विरूद्ध अपनी कलम चलाई इसमें उपन्यासकार प्रभा खेतान ने भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

मुख्य शब्द : प्रभा खेतान और स्त्री–विमर्श।

प्रस्तावना

उपन्यास का प्रभा खेतान हिन्दी की ऐसी लेखिका हैं जिन्होंने स्त्री विमर्ष आन्दोलन को गति देने के लिये अनेक उपन्यासों का सृजन किया। उनके उपन्यासों में स्त्री जीवन और उनसे जुडी समस्याओं के विविध आयाम उदघटित होते है वह स्त्री को ईष्वर की सर्वोत्कृष्ट कृति मानते है। चूँकि नारी प्रेम, वात्सल्य, दया, करूणा के भावों से परिपूरित होती है किन्तु पुरूष–समाज उसके गुणों को उपेछित कर उस पर अत्याचार करता रहता है। जबकि वह जानता है कि नारी सृष्टी निर्माण की प्रभुत्व धुरी है।

इसे वैष्विक विडम्बना ही कहा जायेगा कि पृथ्वी को स्वर्ग के समान सुन्दर और सुखमयी बनाने वाली नारी स्वयं नरकीय जीवन जीने के लिये विवष है। पुरूष–समाज में उसे भोग्या, रक्षणीयॉ और अवला मानकर पुरूष प्रधान समाज में सदैव दोयम दर्जे पर ही रखा गया है। स्त्री सारी उम्र पारिवारिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं से जूझती रहती है, किन्तु विद्रोह का साहस नही जुटा पाती। नारी के इन्ही संघर्षो को उजागर करने के लिए और नारी को स्वाभलम्बी बनाने के लिये स्त्री विमर्ष की कल्पना की गई है। इस आन्दोलन को मूर्तरूप देने के लिये भारतीय हिन्दी लेखिकायें भी उसमें आयी है। सुश्री प्रभा खेतान ऐसी ही उपन्यासकार है जिन्होंने नारी पर होने वाले अत्याचार, अनाचार को अपने कथा साहित्य में उजागर किया है।

सुश्री खेतान मानती है कि नारी अपनी अश्रूपूर्ण नियती को स्वीकार कर सबसे बडी भूल करती है। यही भूल स्त्री–मुक्ति के मार्ग पर सबसे जटिल अबरोध है वह अपने उपन्यास **''छिन्नमस्ता''** लिखती है कि–'स्त्री होना कोई अपराध नहीं है पर नारित्व की ऑसू भरी नियति स्वीकार करना बहुत बडा अपराध है। समाज में नारी को सदैव महत्वहीन, उपेछित और तिरष्कृत रखा है। वह बहुमूल्य होते हुये भी स्वयं को हीन, भोग्या और अवला जैसे विशेषणों का खुलकर विरोध नहीं कर सकती।

हजारों वर्षो से चले आ रहे शोषण–चक्र की पीडा व घुटन ने स्त्री की वैयक्तिक चैतना को भ्रमित किया है, जिससे दुष्परिणामतः उसके अन्तर मन में मुक्ति की झटपटाहट सशक्त रूप नहीं ले सकी। परतन्त्रता की बेडियों में जकड़ी स्त्री भयाक्रान्ति जीवन का बोझ ढोने को विवष है। सुश्री खेतान ने अपने उपन्यासों की कथा वस्तु में स्त्री के अन्तरमन की भय को चैतना में परिवर्तित करने का प्रयास किया है, ताकि उसका स्वाभिमान जाग्रत हो सके और वह समाज के संघर्ष करने को प्रस्तुत हो सके।

सुश्री खेतान की लेखिनी एक पक्षीय नही है बल्कि वह स्त्री के अवला और सवला दोनों स्वरूपों को उद्घाटित करती है। उनकी अभिव्यक्ति में सहानिभूति का पक्ष अभिमुखर प्रस्तुत है। ऐसा प्रतीत होता है कि लेखिका स्वयं भी इन समस्याओं से रूबरू हुई है। उन्होने अपने प्रत्येक उपन्यास में स्त्री संबंधी विभिन्न समस्याओं को उद्घाटित किया है। सदियों से दासत्व की मानसिकता को ढोते हुये स्त्री अर्न्तृध्वन्त से ग्रस्त ही है। पितृसतात्मक पारम्परिक दुर्गग्रह और कर्तव्यों का असहाय बोझ सदैव ही स्त्री के आँचल से बधे रहे और उसे अधिकार विहिन बनाकर विद्रोह करने से रोकते रहे।

बदलते समय ओर साक्षरता के बढ़ते प्रतिषत के कारण नारी के समक्ष नई–नई चिनौतियॉ, पारिवारिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्याऐं ज्वलन प्रष्न बनकर खडी रही है जन्म से ही स्त्री जीवन का संघर्ष प्रारम्भ हो जाता है, लैगिंक असमानताओं को कुलदीपक और पुत्री को परायाधन समझा जाता रहा है। ''दूधो नहाओ पूतों फलों'' का पारम्परिक आषीर्वाद प्रकारान्तर से पुत्री जन्म की उपेक्षा को दर्शाता है छिन्नमस्ता अपन्यास की प्रिया अपनी ही माँ बदरा से उपेछित होती है यह तिरस्कार उसके बाल मन को असुरक्षा और दैन्य–भावना से भर देता है, प्रिया की व्यथा इस संवाद में अभिव्यक्ति होती हैः– ''उन्होने कभी मुझे प्यार नही किया, कभी गोद में लेकर चूमा नहीं। मैं चुपचाप घण्टो उनके कमरे के दरवाजे पर खडी रहती। षायद अम्मा मुझे भीतर बुला लें।..... मगर नहीं, इस शाष्त्व दूरी बनी रही हमेषा हम दोनों के बीच।'' पुत्री के प्रति असमानता का भेदभाव पूर्ण व्यवहार उनके प्रत्येक उपन्यास में एक समस्या के रूप में दर्शाया गया है क्योकि बाल्यावस्था से ही उपेक्षा व तिरस्कार सहते हुये स्त्री आजीवन हीन भावना से ग्रस्त रहती है स्त्री के जन्म लेते ही उसे रूढ़ीवादी संस्कार घुट्टी में पिलाये जाते है, ताकि वह पुरूष की चाकरी को अपना धर्म समझे अमानवीय अत्याचारो को चुपचाप सहन करे और विद्रोह का विचार कभी मन–मस्तिष्क में न लाये ''छिन्नमस्ता'' की कस्तूरी, प्रिया ''अपने–अपने चेहरे'' की रमा, मिषेस गोधन का, ऋतु को, ''पीली ऑधी'' की पद्मावती, स्त्री–पक्ष की वृन्दा, ''तालाबन्दी की सुमित्रा आदि स्त्री–पात्र अनेक प्रत्यन्न करके भी रूढ़ीवादी संस्कारों से मुक्त नहीं हो पाती है और भीतर ही भीतर आत्म–पीड़ित होती रहती है पुराने और नये मूल्यों के संघर्ष से उनका मन अषान्ति, अर्न्तध्वंद से भर जाता है।

''छिन्नमस्ता'' की प्रिया आत्म–पीड़न की प्रवृत्ति से आक्रोषित होकर प्रष्न करती है :–''क्रूर मैं नहीं क्रूर'' तुम्हारे भीतर बैठ हजारों सालों की परम्परा से ग्रसित एक रूग्ण मानस है, जो तुम्हें कभी चैन नहीं होने देता, तुम्हारी उपलब्धियों से खुश नहीं होता। फिर तुम अपने प्रति अपनी अक्रामक क्यों हो प्रिया? क्यों सलीप पर लटक कर खुद की हथेलियों में कीलें ठोकती रहती हों? क्या मिलता है इस आत्मपीड़ने से? ''

स्त्री का मौन आत्मपीड़न ही उसकी समस्याओं का मूल कारण हैं। स्त्री के मौन को उसकी स्वीकृति समझकर पुरूष वर्षो से अपना स्वार्थ साधता आया है स्त्री के समक्ष धर्म, संस्कृति, नैतिकता और आदर्ष के अलंघ्य पर्वत खडें कर दिये गये, जिससे उसका व्यक्तित्व कुन्ठित होता चला गया। प्रत्येक समस्या के लिये वह स्वयं को दोषी मानती रही। ''छिन्नमस्ता'' की प्रिया सफल व्यवसाई बनने के बाद भी स्वयं को एक बहू, एक पत्नी, एक मॉ के रूप में असफल मानकर अपराध बोझ से ग्रस्त रहती है।

''अपने–अपने चेहरे'' कि रमा अपार्थिक रूप से आत्मनिर्भर सुशिक्षित होकर भी विवाहित पुरूष से अवैध प्रेम संबंध के कारण स्वयं को अपराधी मानती है। ऐसे ही अनेक स्त्री पात्रों के माध्यम से सुश्री खेतान ने पारम्परिक रूढ़ीवादी संस्कारों की कुन्ठा के मनोवैज्ञानिक दुष्परिणामों को अपने उपन्यासों में उभारा है। इस कुन्ठा से मुक्ति हेतु स्त्री–शिक्षा और स्त्री के वैचारिक स्वतंत्रता पहली सर्त है। स्त्री मुक्ति का ओजस्वी स्वर वैचारिक स्वतंत्रता के बिना गुंजायमान नहीं हो सकता।

सुश्री खेतान ने अपने प्रत्येक उपन्यास में स्त्री–शिक्षा पर विशेष बल दिया है शिक्षा के अभाव में स्त्री चेतना असंभव है '' शब्द से वंचित होने के अर्थ है, शिक्षा से वंचित होना और अन्तः तो गत्वा इसके मायने में :– हस्तक्षेप करने की मनाही, बोलने की मनाही, केवल आदेश का पालन करना, परजीवी बनकर जीना अपने को बुद्धू समझना, अपनी पहचान खो देना, भूल जाना।'' शिक्षा ही मनुष्य को पशु तुल्य जीवन से ऊपर उठाती है उसे अपने अस्तित्व का बोध करती है। ''अपने–अपने चेहरे'' की रमा , ''छिन्नमस्ता'' की प्रिया, ''पीली ऑधी'' की सोभा, ''स्त्री–पक्ष'' की वृन्दा आदि स्त्री–पात्र शिक्षा के बल पर ही अपने अस्तित्व की पहचान हेतु संघर्ष करते है और आत्म विष्वास पूर्वक सामना करती है।

लेखिका मानती है कि स्त्री के व्यक्तित्व का स्वतंत्र विकास शिक्षा द्वारा संभव है, शिक्षा ही दासत्व की मानसिकता से मुक्त कर सकती है, शिक्षा ही अन्याय के विरूद्ध विद्राह कर साहस प्रदान करती है। सम्भवतः स्त्री की स्वतंत्रता सत्ता–पुरूष के भय का कारण है इसलिये अप्रबल भी पारम्परिक संक्रीण मानसिकता से मुक्त परिवारों में स्त्री–शिक्षा विवाद के

लिये एक अप्रतिरिक्त गुण से अधिक कुछ भी नहीं है। पुरूषवादी सत्ता के समक्ष एक समर्थ, साहसी, विवेकषील, सुशिक्षित, योग्य, आत्मनिर्भर स्त्री के प्रति सामाजिक दृष्टि कोण शंकात्मक और क्रूर होने लगता है।

कैसे विसंगति पूर्ण स्थिति है कि व्यवस्था के विद्रोही पुरूष क्रांतिकारी की उपाधी प्रदानकर ससम्मान मनचस्थः होता है, और दूसरी ओर विद्रोही स्त्री को चरित्रहीन, कुल्टा कहकर कलंकित किया जाता है सुश्री प्रभा खेतान के उपन्यासों की नायिकायें रमा, प्रिया, सोभा, वृन्दा आदि समाज से विद्रोह कर अपनी पृथक पहचान बनाने में सफल होती है। अपने जीवन को एक नई दिषा देती है परन्तु समाज की सूल सी चुबती हुई व्यंग्योतियाँ आजीवन उन्हें सालती रहती है।

''छिन्नमस्ता'' की प्रिया पति नरेन्द्र से पृथक अपनी पहचान बनाती है किन्तु समाज के दुर्व्यवहार से व्यतिथ होकर कहती हैः– ''यह मैं कैसा तिरस्कार छेल रही हूँ?..... समाज के ये फिक्रे की नरेन्द्र की पत्नी बिल्कुल अवारा हो गयी है यह क्या मैं हूँ? यह मेरा मै है? प्रिया के चरित्र में स्वयं लेखिका के अनुभव दृष्टिगत होते है। ''पीली आँधी'' की सोभा मात्रत्व की चाह में नर्पुसक गौतम को त्याग कर प्रो. सुजीत सैन से दूसरा विवाह कर उसकी संतान को जन्म देती है, उससे समाज का तनिक भी भय नहीं है। ''अपने–अपने चेहरे'' की रितु भी सामाजिक बन्धनों के प्रति विद्रोह करके रमा के साथ जीवन के नये अध्याय का आरंभ करती है।

स्त्री–पुरूष के संबंधों के विविध रूपों में प्रेम और विवाद, इन्ही दो स्त्रों पर स्त्री सदैव हठली गई और शोषित भी। एक स्त्री के भावुक मन के लिये प्रेम जीवन रस है, शक्ति का स्त्रोत है, किन्तु वह सच्चे प्रेम की खोज में आजीवन भटकती रह जाती है। प्रेम चाहे माता–पिता का हो, भाई–बहन का हो, चाहे प्रेमी या पति का हो, प्रेम के नाम पर स्त्री युगों से स्वयं को त्रोहित करती आई है। सुश्री खेतान के उपन्यासों में विवाहेत्तर प्रेम संबंधों को भी दर्शाया गया है।

''अपने–अपने चेहरे'' की रमा विवाहित पुरूष मिस्टर गोयन से प्रेम करती है, ''छिन्नमस्ता'' में नरेन्द्र विवाह के बाद भी अनेक स्त्रीयों से संबंध रखता है, ''पीली ऑधी'' में पद्मावती और सुरमा का पवित्र प्रेम ही सामाजिक दृष्टि से अवैध है कहा जायेगा, स्त्री–पक्ष की तलाक सुदा वृन्दा और अविवाहित अर्जव का प्रेम संबंध अभिव्यक्ति दुष्प्रभाव है पुरूष के प्रेम के पीछे छिपे हुये छल के विषय में ''छिन्नमस्ता'' की प्रिया कहती है कि –''सर्तहीन संबंध आपकी मानवीयता का घोतक भले ही हो पर अमायने व्यवहारिक दिवालियापन का परिचायक भी होता है।

''पीली ऑधी'' में स्वयं प्रो. सुजीत का प्रेम संबंध अवैध होते हुये भी करूणा भाव से ओत–प्रोत है। सोम्या सहज भाव से कहती है कि '' सुजीत! मैं तुमसे प्यार करती हूँ। मैं जानती हूँ तुम विवाहित हो, मैं विवाहिता हूँ, और हमारे अवैध संबंध, को दुनिया क्या कहेगी? समाज क्या कहेगा? तुम्हारी पत्नी मुझे धोखेबाद कहेगी? यही न, लेकिन में क्या करू सुजीत? सबकुछ समझते हुये मैं अपने आप को रोक नहीं पा रही हूँ।''

यदि विवाह संस्कार की चर्चा की जाये तो यह स्त्री के लिये उसके अस्तित्व का हस्तांतरण मात्र प्रतीत होता है। माता–पिता पुत्री को पराया धन मानकर शीघ्रातिशीघ्र उसका विवाह करके कर्तव्य मुक्त हो जाना चाहते है अनमेल विवाह संबंध तो स्वामी और दासी उपभोक्ता और उपभोग–सामग्री का संबंध मात्रक रह जाता है अनमेल विवाह संबंधों के कारण ही भविष्य में विवाहेतर संबंधों की समस्या उत्पन्न होती है। विवाह के उपरान्त यदि स्त्री विधवा हो जाती है, तो समाज उसे एकाकी उपेक्षित और तिरसकृत कर देता है।

निष्कर्ष

उपन्यास का सुश्री प्रभा खेतान ने अपने कथा साहित्य में स्त्री–विमर्ष के माध्यम से स्त्री असुरक्षा का श्रेष्ठ चित्रण किया है उनके सभी उपन्यासों में स्त्री के योनशोषण की वर्णित की गई है। वर्तमान काल में स्त्री न तो घर में सुरक्षित है न बाहर। स्त्री संबंध पारिवारिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का वर्णन करते हुये सुश्री खेतान ने उनका समाधान भी प्रस्तुत किये है उन्होने अपने कथानकों के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि एक सषक्ति स्त्री और सषक्त पुरूष के पारस्परिक सहयोग से ही विकसित समाज निर्मित हो सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूंची

1. *खेतान, प्रभाः–'छिन्नमस्ताः' राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।*
2. *खेतान, प्रभाः–'पीली–ऑधीः' राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।*
3. *खेतान, प्रभाः– 'अपने–अपने चेहर' राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।*
4. *खेतान, प्रभाः–'स्त्री–पक्ष' राजकमल प्रकाशन दिल्ली।*
5. *गुप्ता, रमणिकाः– 'स्त्री–विमर्षः' कमल और कुदाल के बहानेः शिल्पकला,दिल्ली।*